पाठ 21. हौसले से वीर – युवराज

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य भारतीय क्रिकेटर युवराज सिंह के उस साहस और दृढ़-इच्छाशक्ति को प्रदर्शित करना है, जिसके कारण वे कैंसर जैसी घातक बीमारी से लड़कर जीत पाए। इस पाठ द्वारा बच्चे समझ पाएँगे कि जीवन के उतार-चढ़ाव में व्यक्ति को हौसले का साथ नहीं छोड़ना चाहिए।

पाठ का सारांश

भारतीय क्रिकेट जगत का सितारा युवराज सिंह, जिसने अपने प्रदर्शन के दम पर एक अलग मुकाम बनाया है। उन्हें सन् 2011 के विश्व-कप में 'प्लेयर ऑफ़ दि टूर्नामेंट' चुना गया था। उन्होंने अपने साक्षात्कार में अपनी ज़िंदगी के कुछ महत्वपूर्ण पहलूओं के बारे में बताया। कैंसर से ग्रसित हो जाने के बाद उन्हें बहुत परेशानियाँ झेलनी पड़ीं तथा उनके जीवन में काफ़ी बदलाव आया। कैंसर से उबरने के बाद उन्होंने अपनी ज़िंदगी को और भी सही ढंग से जीना शुरू कर दिया है। कैंसर पीड़ितों तथा अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिले इसके लिए युवराज सिंह ने अपनी आत्मकथा 'दि टेस्ट ऑफ़ माई लाइफ़–फ्रॉम क्रिकेट टू कैंसर एंड बैक' लिखी। उन्होंने 'यू वी कैन' नामक एक संस्था भी बनाई है जो कैंसर पीड़ितों की मदद करती है। उन्होंने अपने हौसले से क्रिकेट की पिच पर ही नहीं जीवन की पिच पर भी स्वयं को साबित कर दिया।

अध्यापन संकेत

बच्चों से पाठ का वाचन करवाएँ। युवराज द्वारा दिए गए प्रश्नों के उत्तरों में छिपी महत्वपूर्ण सीख को बच्चों को समझाएँ। बच्चों से युवराज सिंह के बारे में चर्चा करें, जैसे – उन्होंने क्रिकेट कब से खेलना आरंभ किया, लोग उन्हें किस नाम से पुकारते हैं? आदि।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- विपरीत परिस्थितियों से लड़ने के लिए व्यक्ति हौसला जुटाता है। यह हौसला वह कैसे जुटाता है? मंदिरों में पूजा-अर्चना करके, अपने पर विश्वास रखकर अथवा परिवार तथा मित्रों के सहयोग द्वारा।
- इस पाठ से तुम किस प्रकार प्रेरित हुए? अपने विचार प्रकट करो।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।